जैन धर्म

छठी से चौथी सदी ई० पू० के बीच जैन तथा बौद्ध दो मुख्य धार्मिक आंदोलन हुए। परम्परानुसार जैन धर्म को बौद्ध धर्म से पहले का माना जाता है। जबकि जैन धर्म की अपनी मान्यता के अनुसार जैन आंदोलन भागवत आंदोलन से भी पुराना है। जैन परंपरानुसार जैन धर्म काफी प्राचीन है। एक मशहूर विद्वान् मुनिकांत सागर अपनी रचना 'खंडहरो का वैभव' में बताते हैं कि सिंधु घाटी सभ्यता की जो मुहरें मिल रही है, उन पर जैन तीर्थकरों की आकृतियाँ है।

जैन परंपरा के अनुसार जैन धर्म के संस्थापक प्रथम तीर्थकर (मोक्ष का मार्ग दिखाने वाला) ऋषभदेव थे। ऋषभदेव के बाद 23 तीर्थकर हुए यानी कुल मिलाकर 24 तीर्थकर हुए। जैन धर्म के 24 वें तीर्थकर वर्धमान महावीर हुए। जैन परंपरानुसार वर्धमान महावीर का जन्म 599 ई० पू० में हुआ। ऋषभ मुनि की चर्चा ऋगवेद में है। यजुर्वेद में भी कई तीर्थकरों का नाम है। जैसे - अजित नाथ। जैनियों में एक मान्यता है कि जैन धर्म के 22 वें तीर्थकर अरिष्टनेमी कृष्ण के चचेरे भाई थे। जैन परंपरा के अनुसार 23 वे तीर्थकर पार्श्वनाथ महावीर से लगभग 250 वर्ष पहले हुए।

लेकिन इतिहासकारों में एक सामान्य धारणा बनी जिसके अनुसार वर्धमान महावीर का जन्म 540 ई० पू० में माना गया तथा 24 तीर्थकरों में महावीर के पूर्व सिर्फ पार्श्वनाथ की ऐतिहासिकता को प्रमाणित किया गया है कि वे महावीर से लगभग 250 वर्ष पूर्व हुए। पार्श्वनाथ काशी (बनारस) के रहने वाले थे। उन्होंने सत्य की खोज शुरू की तथा इसके लिए काया-क्लेश को अपनाया था। 84 दिनों के कठोर तप के बाद उन्हें पारसनाथ पहाड़ी पर ज्ञान की प्राप्ति हुई। उन्होंने निम्न चार धर्म की बात की जिसका पालन सभी को करना चाहिए। इसे चतुर्धर्याम धर्म कहा गया।

(i) सत्य (ii) अहिंसा

(iii) अस्तेय (चोरी नहीं करना) (iv) अपरिग्रह (धन संचय नहीं करना)

पारसनाथ ने जो संप्रदाय चलाया,वह निर्ग्रन्थ संप्रदाय के नाम से जाना गया। निर्ग्रन्थ संप्रदाय छठी सदी ई० पू० में अच्छा-खासा महत्व पा चुका था। वर्धमान के माता-पिता भी निर्ग्रन्थ संप्रदाय को अपना लिया खुद महावीर ने भी निर्ग्रन्थ संप्रदाय को अपना लिया था। इस प्रकार जैन धर्म को भले ही महावीर ने चलाया, लेकिन इससे मिलते-जलते धर्म पहले से चले आ रहे थे। इसलिए जैनियों ने इन दोनों धर्म को जोड़कर जैन धर्म की प्राचीनता को दिखाना शुरू किया। लेकिन महावीर के पहले जैन धर्म जैसी शब्दावली नहीं रही।

वर्धमान महावीर का जन्म वैशाली के कुंडग्राम में हुआ था। उनकी माता का नाम त्रिशला तथा पिता का नाम सिद्धार्थ था। श्वेताम्बर परंपरा के अनुसार, महावीर की एक बेटी हुई- प्रियदर्शना या अनुज्जा। उनके दमाद का नाम जामालि था। वर्धमान महावीर ज्ञातृक कुल के क्षत्रिय थे। उनका गोत्र कश्यप था। उनके बड़े भाई का नाम था नंदिवर्धन जो पिता की मृत्यु के बाद शासक बने। उनका नाम वर्धमान रखने का कारण यह था कि इनके जन्म लेते ही खजाने में वृद्धि होने लगी थी।

30 वर्ष की आयु में वर्धमान ने गृह-त्याग कर दिया। गृह-त्याग के बाद नालंदा में उनकी भेंट एक अन्य भिक्षु मसकरी पुत्र गोशाल यानि मक्खलिगोशाल से हुई। उन्होंने मक्खलिगोशाला के साथ मिलकर छः वर्षों तक कठिन तप किया परंतु श्रावस्ती में उन दोनों के बीच इस बात को लेकर अनबन हो गया हो गया कि मनुष्य को क्या करना चाहिए जिससे मोक्ष की प्राप्ति हो। वर्धमान कर्म सिद्धांत के समर्थक थे जबकि गोशाल भाग्यवादी या नियतिवादी थे। गोशाल के अनुसार, नियति ने तय कर दिया है कि क्या होना है तथा इसे कर्म के द्वारा बदला नहीं जा सकता है। अंत में दोनों ने अपने रास्ते अलग कर लिये।

इसके बाद महावीर ने और छः वर्ष तक कठोर तप किया। इस प्रकार कुल मिलाकर 12 वर्ष बाद उन्हें ऋजुपालिका नदी के तट पर जम्भियग्राम में ज्ञान यानि केवल्य की प्राप्ति हुई। इसलिए ये केवलिन् कहलाए। इसके बाद उन्होंने अपने सिद्धांत का प्रचार-प्रसार करना शुरू किया। इसका मुख्य केन्द्र बना मगध, वैशाली तथा पूर्वी उत्तर प्रदेश। 72 वर्ष की अवस्था में उनकी मृत्यु बिहार के पावापुरी में हुई। कुछ विद्वान् उनका मृत्यु स्थल उत्तर प्रदेश के पावा मानते हैं।

महावीर जिन् या विजेता कहलाए तथा जिन् ने जो संप्रदाय चलाया, वह जैन संप्रदाय कहलाया। इस प्रकार अधिकांश विद्वान जैन धर्म का संस्थापक महावीर को मानते हैं। लेकिन जैन परंपरा में जैन धर्म का संस्थापक ऋषभदेव को माना जाता है। महावीर ने समस्त संसार को दुखों से भरा माना है। हालोंकि छठी सदी ई॰ पू॰ के सभी धार्मिक आंदोलनों में संसार के प्रति निराशा की भावना देखी जा सकती है। इसका एक कारण था धार्मिक कर्मकांड, जिससे आम जनता कटती चली जा रही थी। महावीर ने भी दुख का कारण सांसारिक बंधनों को माना है। उनके अनुसार यही माया-मोह है जिसके पाश में आत्मा जकड़ी जाती है। लोग जन्म-जन्म तक सांसारिक मोह में दुख काटते रहते हैं। इसी तृष्णा में आत्मा भटकती रहती है तथा मोक्ष प्राप्त नहीं होता है।

महावीर ने कुछ प्रचलित मान्यताओं को स्वीक़ार किया। जैसे महावीर ने आत्मा तथा पुनर्जन्म की धारणा को स्वीकार किया। उन्होंने कर्म फल के सिद्धांत को स्वीकार किया। लेकिन उन्होंने जन्म आधारित श्रेष्ठता का सिद्धांत नहीं माना। लेकिन पूर्व जन्म के अनुसार अगले जन्म में लोगों को समाज में अलग-अलग स्थान प्राप्त होता है, तथा इस जन्म के अनुसार भी समाज में स्थान प्राप्त होता है, इसे उन्होंने माना। इस प्रकार उन्होनें वर्ण-व्यवस्था को स्वीकार किया। मोक्ष के बारे में प्रचलित सिद्धांत को इन्होंने भी स्वीकार किया यानि निर्वाण की प्राप्ति तभी होगी जब आत्मा पूरी तरह शरीर से मुक्त हो जाएगी। लेकिन वर्धमान ने मोक्ष प्राप्ति के संदर्भ में कुछ सिद्धांत रखे जो मोक्ष प्राप्त करने के लिए आवश्यक माने गए जिसमें एक है **त्रिरत्न** का सिद्धांत। त्रिरत्न के अनुसार लोगों को मोक्ष पाने के लिए तीन महत्वपूर्ण शील का पालन करना होगा।

(i) सम्यक् विश्वास यानि तीर्थकर के बताए मार्ग पर विश्वास तथा साथ ही आत्म विश्वास।

(ii) सम्यक् कर्म या सम्यक् आचरण यानि तीर्थकर द्वारा बताए मार्ग पर चलना तथा

(iii) सम्यक् ज्ञान यानि तीर्थकर द्वारा दिये ज्ञान को अपनाना।

महावीर ने वेद को अस्वीकार नहीं किया, लेकिन उसे अंतिम ज्ञान यानि मोक्ष प्राप्ति का स्रोत नहीं माना। बल्कि उनके अनुसार अंतिम सत्य यह है कि मोक्ष की प्राप्ति तीर्थंकरों के वचन से होगी। यानि महावीर वेद को मानते हुए भी वेद की सर्वोच्चता को नहीं मानते थे। इसी प्रकार वैदिक ईश्वर के अस्तित्व को अस्वीकार नहीं करते थे, लेकिन वैदिक ईश्वर से ज्यादा ताकतवर जैन तीर्थंकर को मानते थे।

त्रिरत्न के अलावा महावीर ने उन लोगों के लिए **पाँच महाव्रत** आवश्यक बताया जो मोक्ष चाहते हैं। महावीर ने पार्श्वनाथ के चतुर्याम में **ब्रह्मचर्य** को जोड़ दिया। ये पंचमहाव्रत श्रमणों के लिए अनिवार्य बताए गए हैं तथा कहा गया कि इन व्रतों का पालन सिर्फ भौतिक रूप से ही नहीं बल्कि मन से भी किया जाए। जैन दर्शन के अनुसार, पंच महाव्रत के साथ-साथ मोक्ष पाने के लिए **काया-क्लेश** पर भी बल दिया गया क्योंकि जैन धर्म में दुख का एक कारण शरीर को माना गया है। जैन धर्म में आत्मा को जीव कहा गया है। जो काफी पवित्र है जिसे भौतिक तत्वों ने पूरी तरह जकड़ लिया है। इसलिए आत्मा भौतिक तत्वों में उलझकर कलुषित हो चुकी है। इस प्रकार मोक्ष तभी मिलेगी जब आत्मा भौतिक तत्व से पूरी तरह मुक्त हो जाएगी। भौतिक तत्व को जैन धर्म में **पुद्गल** कहा गया है। इस प्रकार मोक्ष प्राप्त करने का अर्थ है **जीव** को पुद्गल से मुक्त करना। जब तक शरीर को प्रताड़ित न किया जाए तब तक वह जीव को नहीं छोड़ेगी। इसलिए जैन-धर्म में काया-क्लेश की धारणा आई यानि हमेशा विपरीत परिस्थिति में रहकर तप किया जाए। जैसे - जाड़े में पानी में खड़ा रहना, गर्मी में धूप में खड़ा रहना, एक पाँव पर खड़ा होकर तप करना आदि। जैनियों के सामन्य नियम के अनुसार एक वक्त भोजना करना चाहिए, वह भी अल्पाहार तथा सायंकाल के बाद भोजन नहीं करना चाहिए। पानी छानकर ही पीना चाहिए तथा खुद से भोजन बनाकर नहीं बल्कि भिक्षा माँगकर खाना चाहिए। जीव से पुद्गल को अलग करने की इन सब प्रक्रिया को **निर्जरा** कहा जाता है जिसका अर्थ है संचित कर्म को हटाना यानि जीव से अजीव को अलग करना। मोक्ष पाने के लिए निर्जरा की प्रक्रिया के साथ ही **संवरा** की प्रक्रिया भी चलेगी। संवरा यानि किसी नए कर्म को प्रवेश नहीं करने देना। धीरे-धीरे काया-क्लेश करते-करते अंतिम अवस्था आ जाएगी। जब ऐसा प्रतीत हो कि भौतिक तत्त्व पूरी तरह क्षय होने जा रहा है तो काया-क्लेश को और तेज कर देना चाहिए, अर्थात् आहार को पूर्ण रूपेण त्याग देना चाहिए पानी तक नहीं पीना चाहिए। यही प्रक्रिया **सल्लेखन** कहलाई यानि तब तक पूर्ण उपवास जब तक नश्वर शरीर आत्मा को छोड़ न दे।

महावीर के सिद्धांत में एक नग्नता का सिद्धांत भी था। परंपरानुसार, घर छोड़ने के 13 महीने बाद महावीर ने वस्त्र का त्याग कर दिया था। नग्नता का सिद्धांत सिर्फ मठ के भिक्षुओं के लिए था, उपासकों के लिए नहीं। महावीर ने आम लोगों को आकृष्ट करने के लिए धर्म के सिद्धांत में परिवर्तन भी किया। उन्होंने आम जनों के लिए **अणुव्रत** का सिद्धांत दिया अर्थात् आम जनों को कठोर पंच महाव्रत का पालन नहीं करना है। इस प्रकार महावीर ने उपासकों के लिए पाँच अणुव्रत दिया। आम जनों के लिए मठ में प्रवेश अनिवार्य नहीं था। गृहस्थों के लिए एक मठ में प्रवेश अनिवार्य नहीं था। गृहस्थों के लिए एक विवाह की मान्यता रखी गई। इसी वजह से वैश्य

समुदाय तथा कुछ हद तक शुद्रों ने जैन परंपरा को स्वीकार किया। महावीर ने वाणिज्य-व्यवसाय को स्वीकार किया। ब्राह्मण धर्म सूद-प्रथा का विरोधी था। लेकिन जैन धर्म ने इसे स्वीकारा। जैन धर्म ने जीविकोपार्जन के लिए सबसे अच्छा साधन व्यापार को माना है।

जैन धर्म ने आम लोगों की समस्या को ध्यान में रखा। जैन आम लोगों के संपर्क में रहने वाले थे। इन्हें अपने धर्म की ताकत बढ़ाना था तथा आम लोगों को अपने पक्ष में लाना था। इसलिए ऐसा उपदेश दिया गया जिसे आम लोग समझे। महावीर ने उपदेशों में मागधी भाषा का प्रयोग किया।

जैनियों ने शाकाहारी भोजन पर बल दिया। महावीर ने यज्ञ तथा बलि-प्रथा को पूरी तरह नकार दिया, ब्राह्मणवादी जाति-व्यवस्था को नकार दिया। जैन दर्शन में महिला तथा पुरुष की समानता का सिद्धांत रखा गया। हालाँकि यह सिद्धांत महावीर के पहले से चल रहा था। पार्श्वनाथ के काल में ही भिक्षु तथा भिक्षुणी के अलग-अलग संघ की चर्चा मिलती है।